श्रीरामकृष्ण परमहंस
(18-2-1836 — 16-8-1886)

श्री रामकृष्ण श्री म प्रकाशन ट्रस्ट
(श्री म ट्रस्ट)

कार्यालय : 579, सैक्टर 18-बी, चण्डीगढ़ 160 018
फोन 0172-2724460

मन्दिर : श्री श्रीरामकृष्ण कथामृत पीठ (श्री पीठ)
सैक्टर 19-डी, चण्डीगढ़ 160019

website : http://www.kathamrita.org
email : srimatrust@yahoo.com

श्री श्री रामकृष्ण कथामृत

श्री 'म' कथित

पाँच भागों में सम्पूर्ण ग्रन्थावली का

तृतीय भाग

मूल बंगला का शब्द-शब्द अनुवाद

अनुवाद

श्रीमती ईश्वरदेवी गुप्ता

सहयोग

डॉ० नौबत राम भारद्वाज

एम०ए०, पीएच० डी०

ISBN-13 : 978-81-88343-07-2 (Set)
ISBN-13 : 978-81-88343-09-6 (Volume-III)

सर्वाधिकार : ग्रन्थकार द्वारा सुरक्षित

प्रथम संस्करण : बुधवार, नागपञ्चमी, 15 जुलाई, 1987
पूज्यपाद आचार्य श्री 'म' की 133वीं जन्म तिथि
द्वितीय संस्करण : दीपावली, 17 अक्तूबर, 2009

प्रकाशन : प्रेसीडेण्ट
श्री रामकृष्ण श्री म प्रकाशन ट्रस्ट
579, सैक्टर 18-बी, चण्डीगढ़ 160 018
फोन - 0172-2724460
सहयोग : डॉ० कमल गुप्ता
(श्रीमती) डॉ० निर्मल मित्तल और श्री ईश्वर चन्द्र

मुद्रण : प्रिंट-लैण्ड, कश्मीरी गेट, दिल्ली - 110006

मूल्य : 100/- रुपये

विषय सूची

पूजा और निवेदन— बंगला कथामृत, 1908		vii
निवेदन (प्रथम संस्करण)		ix
निवेदन (प्रस्तुत द्वितीय संस्करण)		xi
'कथामृत'-प्रेरणा-स्रोत		xiii
प्रार्थना		xvii
प्रथम खण्ड	कलकत्ता में श्री ईश्वरचन्द्र विद्यासागर के साथ श्रीरामकृष्ण का मिलन	3
द्वितीय खण्ड	ठाकुर श्रीरामकृष्ण दक्षिणेश्वर-मन्दिर में मणि आदि भक्तों के संग	27
तृतीय खण्ड	श्रीरामकृष्ण श्रीविजया के दिन भक्तों के संग दक्षिणेश्वर में	37
चतुर्थ खण्ड	ठाकुर श्रीरामकृष्ण कलकत्ता के राजपथ पर, अधर, यदुमल्लिक और खेलात घोष के घर भक्तों के संग	47
पञ्चम खण्ड	दक्षिणेश्वर-मन्दिर में मणि आदि भक्तों के संग	63
षष्ठ खण्ड	दक्षिणेश्वर-मन्दिर में रतन, राखाल, हाजरा, मणि प्रभृति भक्तों के संग में	71
सप्तम खण्ड	ठाकुर श्रीरामकृष्ण का कलकत्ता में निमन्त्रण (ईशान मुखोपाध्याय के घर)	81
अष्टम खण्ड	दक्षिणेश्वर-मन्दिर में नरेन्द्र, सुरेन्द्र, त्रैलोक्य आदि के संग श्रीरामकृष्ण	93
नवम खण्ड	श्रीरामकृष्ण दक्षिणेश्वर में पण्डित शशधर आदि भक्तों के संग में	105
दशम खण्ड	दक्षिणेश्वर-मन्दिर में अधर, विजय, मणि आदि भक्तों के संग श्रीरामकृष्ण	133
एकादश खण्ड	ठाकुर श्रीरामकृष्ण प्रह्लाद-चरित्र-अभिनय-दर्शन में बाबूराम, मास्टर आदि के संग	153

द्वादश खण्ड	दक्षिणेश्वर-मन्दिर में बाबूराम, छोटे नरेन, मास्टर, पल्टु, तारक आदि भक्तों के संग श्रीरामकृष्ण ('सम्भवामि युगे युगे')	167
त्रयोदश खण्ड	कलकत्ता में अन्तरंगों के संग में बलराम-मन्दिर में और देवेन्द्र के घर श्रीरामकृष्ण	183
चतुर्दश खण्ड	ठाकुर श्रीरामकृष्ण बलराम-मन्दिर में गिरीश, मास्टर आदि भक्तों के संग	197
पञ्चदश खण्ड	श्रीरामकृष्ण कलकत्ता के बसुबलराम-मन्दिर में नरेन्द्र, भवनाथ, गिरीश आदि भक्तों के संग	227
षोडश खण्ड	भक्त-मन्दिर में भक्तों के संग में राम के घर श्रीरामकृष्ण	245
सप्तदश खण्ड	श्रीरामकृष्ण द्विज, पण्डित जी, मास्टर, काप्तेन, त्रैलोक्य, नरेन्द्रादि भक्तों के संग दक्षिणेश्वर में	253
अष्टादश खण्ड	ठाकुर श्रीरामकृष्ण कलकत्ता नगरी में श्री नन्दवसु आदि के घर	279
ऊनविंश खण्ड	ठाकुर श्रीरामकृष्ण कलकत्ता नगर में शोकातुरा ब्राह्मणी के घर भक्तों के संग	293
विंश खण्ड	श्री श्रीविजयादशमी-दिवस में श्यामपुकुर के घर में सुरेन्द्र, मणि, डॉ० सरकार, गिरीश आदि भक्तों के संग में	303
एकविंश खण्ड	श्यामपुकुर के घर में डॉ० सरकार, नरेन्द्र, मास्टर आदि के संग श्रीरामकृष्ण	317
द्वाविंश खण्ड	श्यामपुकुर बाटी में श्री काली-पूजा के दिन भक्तों के संग में श्रीरामकृष्ण	331
त्रयोविंश खण्ड	काशीपुर बागान में नरेन्द्रादि भक्तों के संग में	343
चतुर्विंश खण्ड	ठाकुर श्रीरामकृष्ण काशीपुर बागान में नरेन्द्र, राखाल आदि सांगोपांगों के संग ('इसके भीतर ही है जो कुछ है')	351
पञ्चविंश खण्ड	काशीपुर-बागान में नरेन्द्रादि भक्तों के संग ठाकुर श्रीरामकृष्ण (बुद्धदेव तत्त्व)	363
षड्विंश खण्ड	काशीपुर-बागान में शशी, राखाल, सुरेन्द्र आदि सांगोपांगों के संग श्रीरामकृष्ण	371
परिशिष्ट	बराहनगर-मठ, नरेन्द्रादि भक्तगण	381

सन् 1908 में बंगला कथामृत भाग-III (प्रथम संस्करण) के प्रकाशन के समय श्री म का 'निवेदन' :

श्री श्रीगुरुदेव
श्री पादपद्म भरोसा
पूजा और निवेदन

नमस्ते भुवनेशाणि नमस्ते प्रणवात्मके।
सर्ववेदान्तसंसिद्धे नमो ह्रींकारमूर्त्तये॥

माँ,

आश्विन का महामहोत्सव उपस्थित है— हमारा नैवेद्य ग्रहण करो। श्री श्रीरामकृष्ण कथामृत, तृतीय भाग इस बार का नैवेद्य है।

माँ, आपके आशीर्वाद से श्री श्रीकथामृत प्रथम भाग का चतुर्थ संस्करण, द्वितीय भाग का द्वितीय संस्करण और तृतीय भाग का प्रथम संस्करण प्रकाशित हो गया है। हम कर जोड़कर फिर प्रार्थना करते हैं कि जैसे श्री श्रीठाकुर के श्री पादपद्मों का ध्यान करके और उनके श्रीमुख से निकले वेदान्त-वाक्य-चिन्तन करके— उनके श्रीमुख का कथामृत-पान करके— उनके भक्तों के संग विहार, अलौकिक चरित्र स्मरण, मनन करके देश-देश में, सर्वकाल में आपकी सन्तानों के हृदय में शान्ति, आनन्द, श्री पादपद्मों में शुद्धा भक्ति और अन्त में परमपद लाभ हो!

माँ, श्री ठाकुर की वाणी और उनके भक्तों की वाणी एक ही है। आज हम ईश्वर-प्राप्ति के लिए नरेन्द्र की व्याकुलता

और तीव्र वैराग्य[1] का चिन्तन करते हैं। और श्री विद्यासागर, शशधर, डॉक्टर सरकार आदि पण्डितों के प्रति उनकी आश्वासन-वाणी और भक्तिपथ-प्रदर्शन का चिन्तन करेंगे। जो लोग 'मैं पापी, मेरा क्या फिर उद्धार हो सकता है' इस प्रकार सोचते हैं, उनके प्रति[2] अभय-वाणी जैसे न भूलें। और 'धर्म-संस्थापन के लिए मैं युग-युग में अवतीर्ण होता हूँ'[3] जैसे हमारा मूल-मन्त्र हो जाए।

एकान्त शरणागत

आपके प्रणत सन्तानगण

देवी पक्ष,
आश्विन 1315 (बं०) साल (1908 ईसवी)

---

1 पृष्ठ 284 2 पृष्ठ 130, 133 3 पृष्ठ 144

निवेदन

(प्रथम संस्करण)

हिन्दी भाषा-भाषी भक्तों के हाथों में श्री श्रीरामकृष्ण कथामृत के तृतीय भाग का यह प्रसाद देते हुए अतीव प्रसन्नता है और सन्तोष भी कि और अधिक संख्या में आन्तरिक-जिज्ञासु-भक्त युगावतार भगवान श्रीरामकृष्ण की अमृतमय अभयकारी वाणी के परिशीलन से मनुष्य-जीवन के ध्येय— ईश्वर-दर्शन— को प्राप्त कर, जीवन्मुक्त होकर जीवन-यापन करेंगे। अवतारी-पुरुषों की वाणी का श्रवण-मनन-निदिध्यासन करने के अतिरिक्त अन्य सरल उपाय भी तो नहीं है ब्रह्मज्ञान-लाभ का या ईश्वर-दर्शन का। अतः पूर्ण विश्वास है कि सद्य अवतार भगवान श्रीरामकृष्ण की 'कथामृत' के रूप में रिकार्ड की गई यह वाणी आचरण में लाए जाने पर सभी भाई-बहिनों को स्व-स्वरूप का ज्ञान-लाभ कराएगी।

पूज्यपाद आचार्य श्री म के 133वें जन्म-दिवस के शुभ अवसर पर हम सबकी श्री श्रीठाकुर, माँ, स्वामीजी, श्री म तथा उनके अन्य पार्षदों से प्रार्थना है कि जो सम्पूर्ण प्रेम-भक्ति-भाव श्री श्रीठाकुर ने बंगला-कथामृत द्वारा भक्तों में वितरित किया है, वही सम्पूर्ण प्रेम-भक्ति-भाव इस हिन्दी 'श्री श्रीरामकृष्ण कथामृत' से भी भक्तों को उसी रूप में प्राप्त हो।

इस ग्रन्थ की रचना और प्रकाशन में जिन्होंने जिस प्रकार की भी सहायता प्रदान की है, उन सबके लिए मैं आभार व्यक्त करती हूँ। इस सम्बन्ध में प्रिय भाई रामप्रकाश गुप्ता और डॉ० नौबतराम का सेवा-सहयोग विशेषतः उल्लेखनीय है। प्रभु से प्रार्थना है कि वे हम सभी से निष्काम सेवा लेते रहें

जैसा कि स्वामी नित्यात्मानन्द जी महाराज ने 20 दिसम्बर, 1967* को रोहतक में प्रार्थना की थी।

इस ग्रन्थ का पाठ करके हिन्दी भाषा-भाषी भ्राता-भगिनियों को भगवान में भक्तिलाभ हो, एवं संसार में परमानन्द प्राप्त हो; भगवान श्रीरामकृष्ण के श्री चरणों में सम्पूर्ण भक्ति-भाव हो; यही इस दीन अनुवादिका की एकान्त प्रार्थना है। ॐ तत् सत्!

विनीता,

ईश्वरदेवी गुप्ता

श्रीरामकृष्ण श्री म प्रकाशन ट्रस्ट
579, सैक्टर 18-बी, चण्डीगढ़-160018
नाग पञ्चमी, 15 जुलाई, 1987 ईसवी।

---

* 20 दिसम्बर, 1967 को की गई प्रार्थना पृष्ठ xvii–xviii पर देखें।

निवेदन

(प्रस्तुत द्वितीय संस्करण)

श्री म ट्रस्ट (श्री रामकृष्ण श्री म प्रकाशन ट्रस्ट) के संस्थापक स्वामी नित्यात्मानन्द जी की महासमाधि के पश्चात् ट्रस्ट की द्वितीय अध्यक्ष श्रीमती ईश्वर देवी गुप्ता अपने पास आने वाले हम ठाकुर-भक्त बालकों से प्राय: कहा करतीं—
''देखो, निरन्तर रुग्णावस्था में रहने पर भी 'कथामृत' के सभी पाँचों भागों का बंगला से हिन्दी में अनुवाद और इनके प्रकाशन का कार्य तो ठाकुर ने मुझ द्वारा सम्पन्न करवा लिया है पर अपने शरीर की लाचारी के कारण इनका संशोधन मैं न कर सकी। यह कार्य अब तुम करो।''

'कथामृत' प्रथम भाग का संशोधन-कार्य उन्होंने अपने सामने ही अपने मार्ग-दर्शन और अपनी देखरेख में इस जन द्वारा सन् 1996-97 में करवा लिया था। सन् 1998 में इसका प्रकाशन भी हो गया था। गत वर्ष सन् 2008 में 'कथामृत' के द्वितीय भाग का संशोधन भी अपने अशरीरी रूप* से उन्होंने स्वयं करवा लिया था। ठाकुर आगे भी इसी प्रकार यह कार्य करवाते रहें!

और अब कथामृत तृतीय भाग का यह संस्करण प्रस्तुत है यथासम्भव संशोधित रूप में।

इस कार्य में जिन-जिन का भी सहयोग प्राप्त हुआ है, उन सभी का हृदय से धन्यवाद। मुद्रण-प्रक्रिया के अन्तिम चरण में श्री आशीश जी और उनकी पत्नी श्रीमती अनुराधा जी

---

* 26 मई, 2002 को बुद्धपूर्णिमा के दिन वे ठाकुर-गोद में समा गईं।

ने सम्पूर्ण समर्पित भाव से मूल बंगला संस्करण देखकर हमारी शंकाओं का समाधान किया है, विशेषत: बंगला गानों के हिन्दी-लिप्यन्तरण, transliteration में। उनके प्रति विशेष आभार।

— डॉ० निर्मल मित्तल

1020, सैक्टर 15-बी,
चण्डीगढ़ - 160015,
फोन : 0172-2772104, मो० : 9872010620

‘कथामृत’-प्रेरणा-स्रोत

जिस दिन मास्टर महाशय (श्री म) ने ठाकुर रामकृष्ण के प्रथम दर्शन किए थे, उसी दिन से ही निज कानों से सुनी ठाकुर-वाणी को, निज चक्षु से देखी ठाकुर-लीला को वे घर आकर अपनी डायरी में संजोते रहे।

अपनी डायरीबद्ध ठाकुर-वाणी को प्रकाश में लाने की श्री म की अपनी तनिक भी इच्छा / योजना नहीं थी।

ठाकुर की महासमाधि के पश्चात् माँ सारदा ने जब श्री म के मुख से डायरीबद्ध ठाकुर-वाणी सुनी तो उन्होंने श्री म को प्रेरित किया कि वे जनकल्याण हेतु अपनी डायरी-बद्ध ठाकुर-वाणी प्रकाश में लाएँ। उन्होंने 26 नवम्बर, 1895 को बंगला में लिखे अपने पत्र में श्री म को लिखा था :

> बाबा जीवन,
> तुमने जो उनसे सुना, वही कथा ही सत्य है। इससे तुम्हें कोई भय नहीं। एक समय उन्होंने ही तुम्हारे पास यह सब कथा रख दी थी। इस समय आवश्यकतानुसार वे ही इसे प्रकाशित करवा रहे हैं। यह निश्चित जानना कि यह सब कथा प्रकाशित न करने से लोगों को चैतन्य होगा ही नहीं। उनकी समस्त कथा जो तुम्हारे पास है, वह सब ही सत्य है। एक दिन तुम्हारे मुख से सुनकर मुझे बोध हुआ कि वे ही वह समस्त कथा बोल रहे हैं।

जयरामवाटी,
27 आषाढ़, 1304 (बंगला) साल।

ठाकुर-वाणी को लीफलेॅट-आकार में प्रकाशित देखकर नरेन्द्र (स्वामी विवेकानन्द) ने श्री म को लिखा था :

> ''...तुम बिल्कुल ठीक कर रहे हो। ...शाबाश! ...तुम्हारे प्रकाशन के लिए बार-बार धन्यवाद। ...बस यही भय है कि इस पैम्फ्लेॅट-आकार से काम नहीं चलेगा... कोई बात नहीं, ...इसे प्रकाश में आने दो...''

—अक्तूबर, 1897

और दूसरे लीफ़लेॅट के प्रकाश में आने के बाद उन्होंने श्री म को लिखा था :

> ''... आपके दूसरे लीफ़लेॅट के लिए बार-बार धन्यवाद। यह वास्तव में विलक्षण है। ...मैं अब समझा कि हममें से किसी दूसरे ने उनका जीवनचरित पहले क्यों नहीं लिखा। यह महान कार्य तो केवल आपके लिए ही सुरक्षित किया हुआ है। वे निश्चय ही आपके साथ हैं।''

— नवम्बर, 1897

और
परिणामत: ठाकुर की यह वाणी 'श्रीश्री रामकृष्ण कथामृत' (कथामृत) नाम से बंगला में पाँच भागों में प्रकाश में आई।

'कथामृत' में वे ही बातें हैं जिन्हें, श्री म ने स्वयं ठाकुरमुख से सुना, ठाकुर के वही लीला-दृश्य वर्णित हैं जिन्हें उन्होंने निज चक्षुओं से देखा, उन्हीं पात्रों का वर्णन है जो श्री म के समक्ष उस समय वर्तमान थे। 8 दिसम्बर, 1924 को श्री म का जगबन्धु (स्वामी नित्यात्मानन्द) के साथ इसी विषय पर वार्तालाप हुआ था।

बातों-बातों में ठाकुर की बातों के तीन प्रकार के evidence (साक्ष्यों) की बात उठी :

(Three classes of Evidence)*

(तीन प्रकार के उपकरण)

प्रथम (direct and recorded on the same day)

ठाकुर श्रीरामकृष्ण ने स्वयं श्री मुख से बाल्य, साधनावस्था इत्यादि के सम्बन्ध में अथवा भक्तों के सम्बन्ध में जो निज चरित बोले थे, और जिसे भक्तों ने उसी दिन ही लिपिबद्ध कर लिया था। श्री श्री कथामृत में प्रकाशित श्रीमुख-कथित चरितामृत है इसी जाति का उपकरण।

श्री म ने स्वयं जिस दिन ठाकुर के पास बैठकर जो देखा था या उनके श्रीमुख से सुना था, उसी दिन रात को (या दिवा भाग में) उन्होंने वह सब स्मरण करके दैनन्दिन विवरण (diary) में लिपिबद्ध कर लिया था। इस जाति का उपकरण है प्रत्यक्ष (direct) दर्शन व श्रवण द्वारा प्राप्त— वर्ष, तारीख, वार, तिथि समेत।

द्वितीय (direct but unrecorded at the time of the Master) ठाकुर के श्रीमुख से भक्तों ने स्वयं जो सुना था, उसे स्मरण कर इस समय बोल रहे हैं। इस प्रकार का उपकरण भी है खूब भला। और दूसरे अवतारों का प्राय: इसी रूप में हुआ है। तब भी

* श्री म दर्शन-IX, अध्याय 14 द्रष्टव्य

चौबीस वर्ष हो गए हैं। लिपिबद्ध रहने से जो भूल की सम्भावना है, उसकी अपेक्षा इसमें है अधिक भूल की सम्भावना।

तृतीय (hearsay and unrecorded at the time of the Master)
ठाकुर के समसामयिक 'हृदय मुखोपाध्याय', 'राय चैटर्जी' आदि अन्यान्य भक्तों से ठाकुर की बाल्य व साधनावस्था के सम्बन्ध में हमने जो सुना है अथवा कामारपुकुर, जयरामवाटी, श्यामबाजार-निवासी या ठाकुर-गोष्ठी के भक्तों के मुख से उनके चरित के सम्बन्ध में जो सुन पाया हूँ, वे हैं तृतीय श्रेणी के उपकरण।

'श्री श्री रामकृष्ण कथामृत' के प्रणयनकाल में श्री म ने प्रथम श्रेणी के उपकरणों पर ही निर्भर किया है।

कलकत्ता, 1317 (बंगला साल) :
1930 ईसवी

कथामृतकार श्री म के अन्तरंग शिष्य स्वामी नित्यात्मानन्द ने ठाकुर-वाणी के प्रचार-प्रसार के लिए श्रीरामकृष्ण श्री म प्रकाशन ट्रस्ट (श्री म ट्रस्ट) की स्थापना के समय ठाकुर से यह प्रार्थना की थी :

प्रार्थना

हे कल्याणमय एवं स्नेहमय परम पिता ठाकुर!

आज हम जगत के सभी दु:ख-सन्तप्त मनुष्यों के लिए शान्ति तथा आनन्द स्वरूप आपकी अमृतमयी वाणी का विनम्रभाव से प्रचार एवं प्रसार करने के उद्देश्य से इस 'श्री रामकृष्ण श्री म प्रकाशन ट्रस्ट' (श्री म ट्रस्ट) की स्थापना करते हैं। स्वामी विवेकानन्द, आचार्य श्री म आदि अपने सांगोपांग पार्षदों तथा श्री श्री माँ के साथ आप हमें आशीर्वाद दें, हमारे साथ नित्य वास करें और मंगलमय दिशा में हमारा मार्ग सदा प्रशस्त करते रहें!

इस निष्काम कर्म तथा नि:स्वार्थ सेवा-भाव से आपके वस्तु-स्वरूप-नरदेह में अवतीर्ण साक्षात् ईश्वर-स्वरूप को हम सतत अनुभव करें!

हमें वास्तविक शान्ति तथा आनन्द की प्राप्ति हो!

समस्त ब्रह्माण्ड के सकल जीव प्रशान्त एवं आनन्दमय हों! समग्र ब्रह्माण्ड में शाश्वत तथा अनन्त सुख-शान्ति का चिरस्थायी निवास रहे!
ॐ तत् सत्!

आपकी विनम्र सेवक-सन्तान,
स्वामी नित्यात्मानन्द

सिविल लाइन्ज, रोहतक।
20 दिसम्बर, 1967

तव कथामृतं तप्तजीवनं कविभिरीडितं कल्मषापहम्।
श्रवणमंगलं श्रीमदाततं भुवि गृणन्ति ये भूरिदा जनाः ॥

— श्रीमद्भागवत 10.31.9

हे प्रभो! आपकी कथाएँ अमृतस्वरूप हैं। संसार-ताप से तप्त जीवों के लिए तो वे जीवनस्वरूप हैं। ऋषियों ने, भक्त कवियों ने उनकी स्तुति की है। वे पापों को हरने वाली हैं। वे श्रवणमात्र से मंगलकारी हैं। वे सुन्दर, सुखद तथा बहुत सुविस्तृत हैं। इस संसार में जो उनका बखान करते हैं, वे (ही वस्तुतः) महान दाता हैं।

श्री 'म' के ठाकुर-दर्शन

श्री 'म' (महेन्द्रनाथ गुप्त) ने ठाकुर श्रीरामकृष्ण परमहंसदेव के 174 शुभ दर्शनों का चित्रण श्री श्रीरामकृष्ण कथामृत के पाँच भागों में किया है।

श्री श्रीरामकृष्ण कथामृत के इस तृतीय भाग में चित्रित 31 शुभ दर्शन :—

क्र.सं.	दिनांक	पृष्ठ	क्र.सं.	दिनांक	पृष्ठ
1.	05-08-1882	3	17.	12-04-1885	193
2.	24-08-1882	14	18.	09-05-1885	201
3.	22-10-1882	21	19.	23-05-1885	213
4.	24-10-1882	39/40	20.	13-06-1885	229
5.	21-07-1883	59	21.	28-07-1885	239
6.	20-08-1883	69	22.	18-10-1885	267
7.	07-09-1883	77	23.	30-10-1885	277
8.	09-09-1883	89	24.	06-11-1885	287
9.	27-12-1883	97	25.	04-01-1886	303
10.	02-03-1884	105	26.	05-01-1886	317
11.	30-06-1884	113	27.	14-03-1886	333
12.	09-11-1884	127	28.	15-03-1886	343/344
13.	10-11-1884	134	29.	09-04-1886	353
14.	14-12-1884	137	30.	12-04-1886	366
15.	07-03-1885	149	31.	13-04-1886	372
16.	06-04-1885	171			